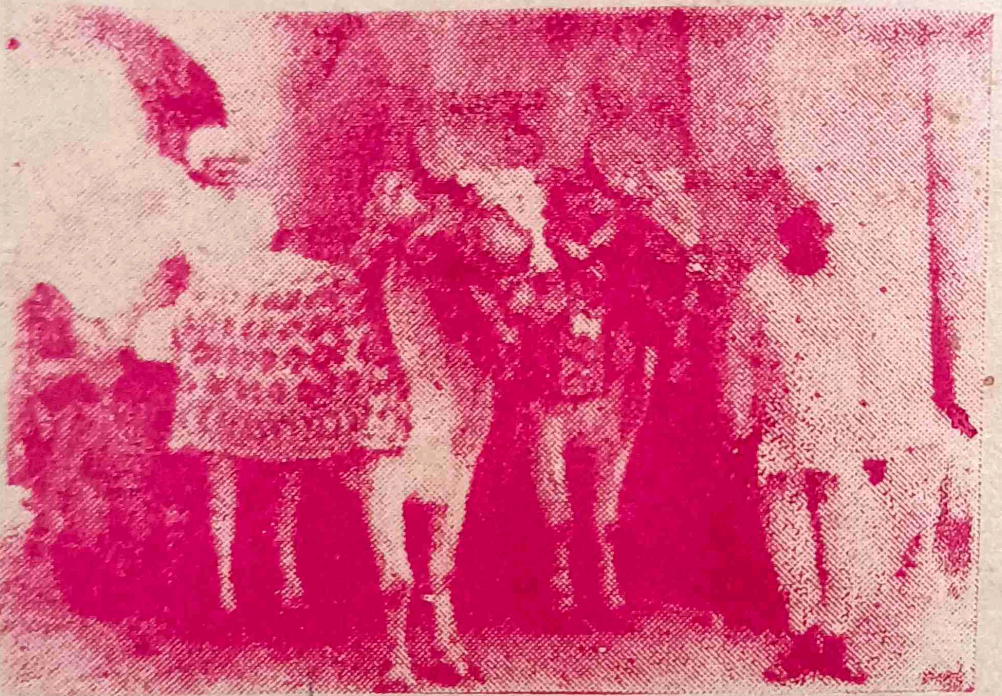
॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

आई पंथ में बीज



लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम सीरवी (लेरचा)

वडेर, बिलाड़ा (राजस्थान)

॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

आई पंथ में बीज

लेखक व संकलनकर्ता
नारायणराम सीरवी (लेरचा)
बडेर, बिलाड़ा

प्रकाशक
पुना बाबाजी
बडेर, बिलाड़ा

प्राप्ति स्थान :

१. बडेर, बिलाड़ा (राज०)

२. राम इलेक्ट्रिक स्टोर्स, सिरणवा रोड, बिलाड़ा

●

मुद्रक :

सज्जन प्रिन्टिग प्रेस

त्रिपोलिया बाजार,

जोधपुर (राज०)

☎ 22970

●

प्रथमावृति

1000

वि. सं. २०४०

●

मूल्य :

१)५० रुपया

●

"दो बातां"



आई माता आपोणो पंथ आई पंथ चलायो । आई पंथ ने मानणियां आज लाखों री संख्या में है । आई पंथ रा डोराबन्धों रो ओ धर्म है के वे आई माता रे बतायोड़ा सुमार्ग माथे चाले । जिणसूं अपोणे पंथ री कार रेवे । आई माता आपरे आई पंथ में बीज ने मोटो तैवार मानियो इण वास्ते हर डोराबन्द रो ओ धर्म वे के बीज रो व्रत राखे ने उजमणो करे ।

मैं इण छोटी किताब में बीज व्रत रो महत्व ठे बीज व्रत रा उजमणा री विधी लिखी हूं । मने घणी उम्मेद है के आई भक्तों ने आ किताब जरूर दाय आवेला । जे इणमें कठेई भूल चूक री वे तो मैं आपने घणी भांत अरज करूं के मने उण भूलों सूं जाणकारी करावजो । मैं आपरो घणो उपगार मानूंला । जको बातां लिखी है वे मैं आई माता रे सम्बन्धी पुस्तकों सूं ने पुराणा कागजात सूं भेली करने लिखी हूं ।

जै आई माताजी री ।

आई माता रो एक सेवग

नारायणराम सीरवी (लेखक)

बडेर, बिलाड़ा



स्व. श्री नारायणराम लेरचा

- समर्पण -

पूज्य पिताजी स्व० श्री धूलारामजी लेरचा
की पुण्य स्मृति में
सादर समर्पित

— नारायणराम सीरवी (लेरचा)

"आई पंथ में बीज"

अपोणें देश भारत में धर्म ने सबसूं ऊँचो मानियो है। भारत रा सन्त महात्मा जुगां पेलाऊँ धर्म रो मारग लोगां ने बतावता आया है। अपोणे देश रा लोग अलग-अलग केई धर्म ने माने। धर्म रे नाम माते अठे केई तरे रा पंथ चालिया। लोग अलग-अलग पंथ ने मानरण लागगा। केई पंथ तो घणाई मानिजीया। ने घणाई लोग उण पंथ माते हालरण लागगा। ओ धार्मिक पंथों मांऊ लारला पांच सौ बरसा सूं एक पंथ 'आई पंथ' चालियो। इण आई पंथ ने साराऊं पेली एक देवी (आई माता) चलायो हो। इण पंथ री मोटी बात आ है के ओ पंथ एक देवी (आई माता) रे नाम सूं चालियो। यूं तो इण भारत री धरती माथे घणाई देवी-देवता अवतार लियो। पण किणी देवी रे नांम सूं कोई तरे रो पंथ नीं चालियो। फगत आई माता इज एक ऐड़ी देवी अवतरी जको आपरे नांव सू आई पंथ चलायो।

इण पंथ ने मानरण वाला करीब-करीब पूरा भारत में एका-दुक्का रेवे। पण घणकरा राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात ने महाराष्ट्र में रेवास करे। जिणमें सगळी जाति रा लोग है। पण सीरवी जाति मात्र इण आई पंथ ने माने ने आई माता ने अपोणी कुल देवी माने। आई पंथ रा मानरण वाला आदमी अपणे जीमणे हाथ रे ने लुगाया अपणे गला में ईग्यारे तार रो बणियोड़ो ने ईग्यारे गांठां लागोड़ो डोरो बांधे। इण डोरा ने 'बेल" केवे। ओ आई माता रे धर्म रो डोरो है। जिण तरे ब्राह्मणों रे जनेऊ वे उणी तरे आई पंथीयो रे ओ डोरो "बेल" वे। आई माता आपरे श्री मुख सूं फरमायो हो "के ओ डोरो मारे पंथ रो पवित्र डोरो है। इण डोरा रे बांधण सूं कोई तरे रा

रोग दोग नी आवे। भूत-प्रेत नी लागे" पण खाली हाथ रे ने गला रे बेल बाधणांऊं की नी वे जठे तांई इण बेल रा धार्मिक नियमों माथे नी चालों। जठा तक अपोरणो कल्याण नी वे सके। आई माता इण बेल रा धार्मिक नियम बताया हा। जिण माते हरेक आई पंथी ने हालणों चाहिजे।

"बेल के ईग्यारह नियम"

बेटी ने परणावजो, पइसो लेजो मत एक।
लक्ष्मी थांरे घणी बधेला, विचार राखजो नेक॥
केणों करजो गुरों रो, मारग बताया प्रमाण।
इतरो ध्यान सदाई राखो, पर नारी मां जांण॥
बयानी सूं लेजो ज्ञान, करो अतिथि रो सम्मान।
यातना मत देवो किणी ने, देता रेवजो दान॥
रक्षा करजो जीवां री थे, हिंसा सूं रो दूर।
हरदम ध्यान धरो आई रो, कंणा मूठ नित पूर॥
निंदा किणी धर्म री मत, करजो थे दिल माय।
यदा कदा झूठ मत बोलो, चोरी जारी ने छिटकाय॥
मत लेजो थे ब्याज रो पइसो, बात आई पंथ री मान।
केवे नारायण सुणो बांडेरुओं, केणों दिवाण रो मान॥

"बेल"

बेल बणी तार ईग्यारे, गांठ ईग्यारे लगाय।
नर रे बांधो हाथ जीमणों, वनिता गले बन्धाय॥
आई पंथ रो ओ डोरड़ो, निश दिन बंधियो होय।
रोग दोष आवे नी तन में, दुखड़ा सब मिट जाय॥

मिले अपुत्रों पुत्र घणा, निरधनियां धन आय।
भूत प्रेत ओ डाकणी, कदेई नी नेड़ी थाय॥
जो राखे बेल सदाई, आई करे उणरी सहाय।
टूटे बेल जदे कदे भी, नई बांधो झट लाय॥
अरज करे नारायण लेरचो, निश दिन बेल बंधाय।
आई पंथ रा भक्त बान्डेरु, डोरा बन्ध कहाय॥

साराऊं पेली आई माता आपरा आई पंथ री शुरूआत कीकर करी ने साराऊं पेली बेल किणरे बांधी।

बेल रो इतिहास

आई माता संवत १५२१ रा भादवा शुद बीज शनिवार ने बिलाड़े पधारिया हा। साराऊं पेला हांबड़ों री गवाड़ी में पधारिया पण हांबड़ रेवण नी दिया। जणे आई माता राठोड़ जाणोंजी री गवाड़ी में पधारिया। जाणोंजी ने वोणी जोड़ायत सोनी आई माता ने घणा आदर भाव सूं आपरी गवाड़ी में राखिया। जाणोंजी अठे राव जोधाजी रा बेटा भारमलजी रा मंत्री हा ने बिलाड़े रो राज काज देखता हा। जाणोंजी रो बेटो माधव बारह वर्ष री उमर में घर सूं रीसणों करने गियो परो हो ने जायने रामपुरा रावजी कने चाकरी करण लागगो, पण जाणोंजी ने माधव री खबर कोनी ही। वे रोज आई माता सूं माधव ने बुलावण री अरदास करता हा। एक दिन आई माता माधव री माँ सोनी ने एक ईग्यारे तार रो बणियोरो डोरो दियो ने कह्यो के रोज ऊठने इण डोरा रे एक गांठ लगा-वजो। माधव आवे जठा तक रोज री एक गांठ लगावता रेजो। सोनी डोरो ले लियो ने रोज एक गांठ लगावे। उठीने आई माता

रामपुरा रा रावजी ने चमत्कार बताया ने कह्यो के माधव ने बेगो घणा मांन सूं बीलाड़े भेजदो। आई माता रे हुकम सूं रावजी माधव ने बिलाड़ा सारु विदा करियो। माधव बिलाड़े आयो तणे सोनी आई माता रे दियोड़े डोरे रे ईग्यारे गांठा लगाय दी ही। माधव ईग्यारवे दिन बिलाड़े आय गियो हो। ईग्यारे तार रो ईग्यारे गांठा लगायोड़ो डोरो आई माता आपरे हाथ सूं माधवजी रे जीमणा हाथ रे बांध ने आपणो आई पंथ चलायो। ने आपरे पंथ रा नियम बताया। साराऊं पेली डोरो (बेल) माधवजी रे बांधीयो हो।

निज जन साधु पिछान हित, चित्यौ अन्त्र विचार।
रच्यौ सूत्र को डोरड़ो, ग्रंथ एक दस धार।।
आई भक्त निजार ध्रम, एसह नाण प्रसिद्ध।
गुरु मन्त्रे स्वराखड़ी, ग्रंथ एक दश दिद्ध।।
दश अवतारे ग्रंथ दश, एकादश हणुमान।
धूप खेव नर कर लसै, ग्रीवा तिय उनमान।।
डोरो आई हुलस चित, दयौ प्रथम माधव।
दाहिने कर नर बाधजैं, कंठे त्रिया बन्धाब।।

आई पंथ ने डोरा रा नियम

आदि धरम आई तणौं, च्यार जुगां मध्य होय।
अकल पंथ सिध साध सुर, साधन कर शिव जोय।।
ब्रह्म ग्यान गुरु मुख सुने, इन्द्रिय संजम होय।
इण मग चालै मानवी, विघन न व्यापै कोय।।
जोत पाट की थापना, गादी कलश मंडाय।
आंठू पहर आराधियै, मोख भक्त जन जाय।।

काचो सूत बटायकै, तार इग्यारे तांम ।
ग्रंथ एक दश गांठजै, बांधीजै गुरु नांम ।।

दक्षिण कर मानव तणै, बनिता गल बंधाय ।
दश अवतारै ग्रंथ गुन, हणूमान हित लाय ।।

हणूमान अवतार दश, ग्रंथ इग्यारे जान ।
डोरो आई मात को, बांधे साधू सुजान ।।

भूत-प्रेत जक्ष डाकणी, देव पित्र को दोस ।
डोरा तणे प्रसाद तै, करै न कबहूँ रोस ।।

जमते डो नहिं जाय जिण, कोढ कलंक न थाय ।
मिलै अपुत्रां पुत्र घणा, अधनी धन ग्रह आय ।।

करणी साची होय, कठण रहणी मन भावै ।
कूड़-कपट अघ करम, दुष्टता दूर गमावै ।।

चोर जार ठग ठोड़, कुसंगी संग न कीजे ।
पर निंद्या परथात, झूठ श्रवणों न सुणिजै ।।

निज क्रिया धरम संयम रहे, इन्द्रिय पांचू हाथ कर ।
गुरू मुखी होय इण मग चलै, जै अमरापुर जाय नर ।।

लोभ न करै अजोग भोग, निज वनिता भावै ।
अहंकार मद मोह क्रोध, कबहूं न बढावै ।।

साच विणंज सचियार, धरम निजार धरं तह ।
अभैदान अति भाव दूर, दुविधा जुं करंतह ।।

उरख्यमा धार गरवा पनै, दांन सुपात्रा दीजियै ।
निज वंश साधु मग अनुसरै, ग्यान सुधारस पीजियै ।।

आई माता सीरवियों री कुलदेवी है ने से सीरवी आई पंथ रा डोराबंध है।

"सीरवी होय आई माता ने ध्यावो"

सीरवियों री कुल देवी है, जग जननी आई मात।
रक्षा करे मां विपत पड़ियां, दुखड़ा करे निसात॥
वीखो आयां आई ने ध्यावो, ध्यान धरो दिन रात।
होवे घर में सुख सम्पदा, मानों आई पंथ री बात॥
यदा कदा जे टूटे बेल तो, बांधो थे नई लाय।
आदमी रे हाथ जीमणे, त्रिया गले बंधाय॥
इग्यारे तार री बणी बेल, गांठ इग्यारे लगाय।
मानो बात आई पंथ री, सब संकट मिट जाय॥
ताजा भोजन भोग लगावो, कणां मूठ नित पूरो जाय।
नेम धर्म पालो थे निश दिन, पाप करम ने दो छिटकाय॥
ध्यान धरो थे आई मात रो, निश दिन मन्दिर जाय।
याद करो थे साचा मन सूं, मां हाजर उभी आय॥
वो नर आई रो साचो सेवग, सिवरे जो दिल माय।
अरज करे लेरचा नारायण, सुणजो चित लगाय॥

आई माता आपरे पंथ में उजाली बीज ने बड़ी मानी है। जिण तरे पूजा देवी-देवताओं रा जिऊं के सत्यनारायण भगवान री पूनम, हनुमानजी रो मंगलवार, संतोषी माता रो शुक्रवार ने सूर्य भगवान रो रविवार वे। उणी तरे आई माता रो शनिवार ने हर महिना री उजाली बीज तैवार मानियो है। ओ आई माता रो दिन है इण सारूं सें डोराबन्धों रो ओ धर्म है के उजाली बीज ने अपोणो काम री छुट्टी राखे ने बीज रो वृत करे। आई माता रे मीठा भोजन रो भोग लगावे ने कणामूठ पूरे। बीज रो व्रत

हरेक डोराबन्ध ने जरुर करणो चाहिजे । ने आपरी इच्छा शक्ति माफक इण बीज वृत रो उजमणों करणों चाहिजे । आई पंथ में बीज घणी मोटी है ।

बीज शनेचर थापना, जोत प्रगटे जांम ।
अटल पंथ आई तणो, फले मनोरथ कांम ।।
इण मग चाले मानवी, ब्रह्म ज्ञान ब्रिह्मचार ।
चावो पंथ जुग च्यार रो, देता मोख दवार ।।

❁

आद पंथ आई तणों, करे सेव चितधार ।
जमो जगावे हेत सूं, आधी रात मझांर ।।
कणांमूठ पूरे कलस, खीर खांड नई वैद ।
सतरे पेंडा साचवै, चेला सुणावें भेद ।।

साल री बारह बीजों रो ओ महत्व है ।

(१) चैत्र शुक्ला बीज

काचा जके तो किच किचा, पाका पान परांण ।
पाणी सरीसा पातला, धुआँ सरीका नीर ।।
आबा सूं ऊँचा घणा, बांण लागे नी तीर ।
करो बीज नर पूजो बीज, घर गोविन्द री राखो कार।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(२) वैसाख शुक्ला बीज

दूजी बीज धरण आकाश, उतर दिशा में महल कंवलास ।
चन्दा सूरज दीसे सोही, तो बीज बिना दीसे नी कोई ।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(३) जेठ शुक्ला बीज

तीजी बीज तीनों ही देवा, ब्रह्मा विष्णु महेश री सेवा ।
शिब शक्ति रो मेलो होय, तो बीज बिना दीसे नी कोई ॥
करो बीज नर उतरो पार ॥

(४) आषाढ शुक्ला बीज

चोथी बीज सब कुछ हुआ, आप आप का वर्ण जुआ ।
दास कबीरा दीसे साई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ॥
करो बीज नर उतरो पार ॥

(५) श्रावण शुक्ला बीज

पांचवी बीज हुवा पंच चावा, वरण तेतीसा रा मेला होई ।
आई माता री पूजो बीज, तो बीज बिना दीसे नी कोई ॥
करो बीज नर उतरो पार ॥

(६) भादरवा शुक्ला बीज

छटी बीज सब दरसण जाणे, लखई छियासी रो मिलियो टाणो ।
त्यागी मुनी दीसे सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ॥
करो बीज नर उतरो पार ॥

(७) आसोज शुक्ला बीज

सांतवी बीज सांतो ही वारा, सांत सायर ने पंथ पियाला ।
पंथ पियाला मे दीसे सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ॥
करो बीज नर उतरो पार ॥

(८) कार्तिक शुक्ला बीज

आठवीं बीज पूरो आसा, अड़सट तीरथ घट में वासा ।
अष्ट कुली पर्वत दीसे सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(९) मिगसर शुक्ला बीज

नबमी बीज नवा हिन्द, नवलख चोरासी दीस ।
गोरख बाला दीसे सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(१०) पोह शुक्ला बीज

दसवीं बीज जपो दश नामा, दशवां द्वारा बैठा रामा ।
दश अवतार धरिया सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(११) माघ शुक्ला बीज

ईग्यारवीं बीज हुवा उजाला, चोसट जोगरण नवलख तारा ।
वीर पीर ने सतियां सोई, तो बीज बिना दीसे नी कोई ।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

(१२) फाल्गुन शुक्ला बीज

बारे बीज बारे मासी, टूटा नकलंग पावो रीज ।
बीज रे दिन उगा चन्दा, घर संतो रे बरसे आणंद ।।
सांज सवेरे दरसरण खड़ा, तो पाप काया रा नाटे परा ।
रीख तो वे ही आगल वाणी री, महादेव भाकीया बीज पुराण।।
करो बीज नर उतरो पार ।।

श्रो तो साल री बारह बीजों रो महत्व है ने इणों मांय सूं चार बीजों ने बड़ो तेंवार मानीयो है वे चार बीजों है।

(१) चेत शुक्ला बीज (२) वैशाख शुक्ला बीज
(३) भादरवा शुक्ला बीज ने (४) माघ शुक्ला बीज।

श्रों चारो बीजों रो महत्व इण मुजब है।

(१) चेत शुक्ला बीज

संवत् १५६१ रे चेत शुक्ला बीज ने श्राई माता श्रलोप विया हा।

(२) वैशाख शुक्ला बीज

इण बीज रे दिन किसान नवां वर्ष रो हलोतियो करे। हल री पूजा कर नवी साल री खेती शुरू करे।

(३) भादरवा शुक्ला बीज

संवत् १५२१ रा भादरवा शुक्ला बीज रे दिन श्राई माता बिलाड़े पधारिया।

(४) माघ शुक्ला बीज

संवत् १५५७ रे माघ शुक्ला बीज ने श्राई माता श्रापरे हाथ सूं तिलक कर गोयन्दजी ने गादी बैठाय ने दीवाण री पदवी दी ही।

श्रों चारों बीजों ने श्राई माता रा मिंदर में मेलो भरीजे ने दिवाण साहब श्रापरे हाथ सूं श्राई माता रा चोला, मोजड़ी, माला ने ग्रंथ री पूजा करे। दिन रा १ बजियां श्राई माता रे घी गुड़ रा बणियोरा चूरमा रो भोग लगाय श्रासीस करे। श्रा श्रासीस रात रा नउ बजियां भी वे। दिन रा श्रासीस साल री

बारे बीजां ने वे। ने रात री आसीस बारे बीजों रे अलावा हर शनिवार ने वे। औं चारों बीजों ने शाम रा आई माता री भेल ने गांव रे बाराऊँ, गाजा बाजा सूं बधाय ने लावे। औं चारों बीजां मांय सूं भादरवा री बीज ने सबसूं बड़ो तैवार मानीजे।

'भादरवा री बीज'

ओ दिन आई माता रे डोराबन्धों रो घणों पवित्र तेवार है। बीज रे दो दिनाँ पेली आई पंथी आपरी गांयां, भेंसा रो सगलो अबोट दूध लायने आई माता रे मंदिर में भेंट करें। उण सगला दूध ने जमावे। जको करीब १० ने १५ मण वे। उण सगला दही ने बीज रे दिन प्रभात री पोर रा एक मोटी भाटा री बिलोवणीं में घालने दो आदमी बिलोवे। उण सूं जको घी निकले बो घी अखण्ड जोत में डालिजे। दिन री ईग्यारे बजियों बड़ करसो सै जोड़े उण बिलोवणी री पूजा करे। ने सूर्य भगवान ने छाछ रो छांटो नाकिजे। ने उण घी सूं भरियोड़ी जोत ने जलाय ने बड़करसो ने बड़करसी बन्द परदा में मन्दिर में लेजावे। मन्दिर में दिवाण साहब उण जोत री पूजा करे ने पेली वाली जोत री जागा इण नई जोत ने कायम करे। बिलोणीं री छाछ ने भक्त लोग बड़ा प्रेम सूं चरणामृत मान ग्रहण करे। अठे ताई देखीजे के भक्त लोग उण छाछ ने शीशियों में भरने डाक सूं आपरा अलगा रेवता रिस्तेदारों रे भेजे। इण बीज रे दिन गुजरात, मालवा, पश्चिमी राजस्थान सूं घणा बान्डेरू दर्शण करण सारू आवे। वो बान्डेरूआं रे रेवण रो ने खावण पीवण रो पूरो बन्दोबस्त अठासूं बिगर पईसा रेवे।

दिन रा आई माता री आसीस वे ने सिन्जया रा बड़ा ठाट-बाट सूं गाजा बाजा सूं आई माता री भेल ने बधाय ने लावे।

रात रा नऊ बजियां आसीस वे ने पूरी रात जागरण रेवे। लोग घणा कोड सूं भजन भाव करे।

आई पंथ में बीज ने घणी पूजनीक मानी है। इण सारू से डोराबन्धों रो ओ धर्म वे जावे के इण दिन आई माता रो व्रत राखां, ने आई माता रे अबोट रोटी रो कांसो कर कणांमूंठ पूरां। अपोणें काम री छुट्टी राखणी चाहिजे। बीज रो व्रत करता थका जदे कदेई आपरी मन मरजी वे तणे बीज व्रत रो उजमणो घणा ठाट बाट सूं करणों चाहिजे। जिण तरे अपों देखों के सत्यनारायण भगवान, अनन्त भगवान, सूर्य भगवान, संतोषी माता रे व्रत घणा उच्छाव सूं करे। पण अपोणे बीज रो उजमणों भेल ने बधाय ने जीमण बणांय कुटम्ब कबीला ने भेला करने करदों। उण दिन पूजा विधान सूं करणी चाहिजे। जिण तरे दूजा उजमणा वे उण तरे बीज व्रत रो उजमणों भी पूजा पाठ कर आई माता री कथा बांच ने करनो चाहिजे। आई माता रा डोराबन्द पेली घणकरा अनपढ हा। आई माता करसां री कुल देवी है। पण आजकल रा जमानां में घणकरा भाई बहिन पढ लिखगा है इण वास्ते अबे उजमणा में आई माता री कथा बांचने से जणों ने सुणावणी चाहिजे। बीज व्रत रा उजमणा री रीति नीचे लिखीया मुजब है। घणी उमंग सूं उजमणों करणों चाहिजे जिण सूं अपोणी कुल देवी आई माता अपोणी रक्षा करे।

'बीज व्रत रो उजमणो'

जिण बीज रे दिन उजमणों करणों वे उण सूं पेली जाय आई माता ने निंवतणा चाहिजे। जणे बीज रे दिन आई माता री भेल अपोणे घरे आवे उण पुल में कुटम्ब-कबीला, सगा-

सम्बन्धियों रे सागे खूब गाजा बाजा सूं भेल ने बधाय ने अपोणे आंगणा में लावणी। ने अपोरे बणियोड़ी भोजन सामग्री री पूजा करावणी।

अपोणे आंगणा में चोखो मण्डप बणाय ने उण में आई माता री पूजा करणी चाहिजे। जको बीज उजवे वो भक्त आपरे हाथ सूं पूजा करे। साराऊं पेली आई माता रो पाट थापन करणों चाहिजे। पाट थापता वेला ओ जाप बोलणों।

'पाट थापण रो जाप'

उतर दिशां सूं जोगणी खड़ी, हीरा माणक मोतियां जड़ी।
कानां कुन्डल हाथा छड़ी, दे परकमा लागूं पाय॥
मूं थारों पुत्र थूं मारी माय, शिव पूजूं शक्ति पूजूं।
पूजूं गुरां रा पाय, पांच महेश्वरी आज्ञा दो तो,
लागूं गादी रे पांव।

पाट री थापना करियां पछे कलश थापन करणो। एक कलश रे मोली बांध उणरे उपर लूंबरों नारेल मोली बांधोड़ो रखणो। उण पुल में ओ जाप बोलणो।

'कलश थापण रो जाप'

ओम्कार गुरांजी, उतर दिशा कुसांई, मु थांने बूजूं गरुड़ कोटवाल। हाथ लो काम करो भलाई। माख मुगत फल पाई। सामीजी जिस तगत गंगा पीवण आई। ओऊंकार सामी जकर जती पुरुष हुवा। जद कलश थापीया तीन भवन का राज। दूसरा ओऊंकार गुरुजी पूरब दिशा गुसांई मैं थाने बूजूं भेरू कोटवाल। हाथ लो काम करो भलाई। रूपा का आसवण रूपा का वासणा।

कलश थापीया तीन भवन का राज। चोथा ओऊंकार गुरांजी पिच्छम दिशा कु साई। मु थांने बूजूं गुणेश कोटवाल। हाथलो काम करो भलाई। कलश मंत्र ओम गुरूजी री सरण पादका चरण पादका। उपर सेंसकरण जलहार, जलहार उपर कमल। कमल पर सेंस का फंण। उपर धवल, धवल पर कवल। कवल पर चींग, सीग पराई 'राई पर धरणी, धरा, धरा उपर उमर। उमर पर घूमर, घूमर पर बाये। बाये पर जलहर, जलहर पर राजरंज। पर तज, तज पर धीरज मण्डल। धीरज मण्डल पर मेरू मण्डल। मेरू मण्डल पर सचियेक मण्डल। सुसिये पर तारा मण्डल, तारा मण्डल पर आकाश मण्डल, आकाश मण्डल पर शिवपुरो। ये जींदा रा बाचा। सुगरा वो तो भरपीजे। नुगरा जावे पीयासा। ऐ तो चार जुगां रा कलश जाप सम्पूर्ण विया ने गादी बैठ श्री आई माताजी कहिया।

कलश री थापना करियां पछे आई माता ने फूल, दोब चढावे ने पंचामृत चढावे। आई माता रे पाट रे कने कणां मूठ रखणा। कणां मूठ रखती वेला ओ जाप बोलणों –

आखा साखा स्यामरा, वीणती हुशियार, वे नर कदेई नी एकला साथे है किरतार। आखा जाप सम्पूर्ण विया गादी बैठ श्री आई माता कहिया।

कणां मूठ रखियां पछे आई माता री घी री जोत करणी ने अगरबती जलावणी। जोत करती वेला ओ जाप बोलणो।

'ज्योति का जाप'

आई माता आदि कंवार, बाल कंवार। रूप कंवार, गेंद कंवार ।। सीलवंती, संतोषवती, ज्वालामुखी, देख दीपक री धरियांणी।

आया विघन परड़े करजो। दांणवों री देवी खै करजो।।
साधो रा पड़दा प्रगट करजो। दिन उगे घर पालजो।।
चालो साहिब रे दरबार। ब्रिह्माजी करे आरती।।
विष्णुजी ढोले वाय, धूम रिखेसुर गूंथे सेवहरो।।
धिन-धिन आई मात।।

आई नै अवतारियां अन्धारे ऊजाल, घर साधो रे बधावणो। साहिब नै परिवार, भणता गुणता चालिया, अमरापुर में माहलिया। जपसी जपणहार, जठे निरंजण निराकार।। जठे तपे आईजी रा जाप, कीरत कमाई फुरमावो (नो) गुसांई नमोः शिवाय, नमोः शिवाय।।

आई माता री जोत करियां पछे जको भोजन बणायो उणरो भोग लायने धरणो। ने पछे आसापुरी धूप रो धूप खेवणों।

'धूप रो जाप'

धूप ज्यूं रूप, फैंक ज्यूं पूजा। अलख निरंजण और देव नहीं दूजा।
धूप चढे विघन टले, तैंतीस किरोड़ देवताओं री वाचा फलै।।

अलख रे पाट पूजा चढे, धूप ध्यांन नेम ने पोखे।
खिमिया जाप संतोष पूजा, पांचाजी कथे नारायण गावे।।

पहला धूप विसनु नै दीजै, धूप रो जाप जाणे जपे।
चौरासी रा फेर टले।। धूप जाप सम्पूर्ण विया
गादी बैठ श्री रोहितासजी कहिया।

धूप करियां पछे आई माता रे भोग लगावे जणे भोग रो जाप बोलणों।

'भोग रो जाप'

ओऊं म गुरुजी अगन जोग, अगन भोग, अगन मारे, अगन तारै। अगन इगोतर किरोड़ ले तिरे। जो जाप भोग का कहे। आस देव धूप ध्यान करै। मन प्रसन्न कर पांचू इन्द्री वश करै। खमिया जाप का जो ध्यान धरै। जठे निरंजण देव की पूजा होय। मुख सन्मुख धरियो। उठो विष्णु पालण करो। ब्रह्मा, विष्णु, महेशुर शिव जोगी नै कहियौ। ऐरण माता दरड़ा पिता भोग दे ध्यान धरो ।। भोग लगे विघन टले। आईजी ने अमर फल चढ़े। श्री देवी री वाचा फले ।।

आ पूजा करियां पछे आई माता रे पाट रे सामी होम करणो। होम (हवन) रे वास्ते धुपीया धरो उण वेला ओ जाप बोलणो।

'धूप रो जाप'

जागो धूप जागो माया जागो देव। म्हूं करूं आपरी सेव।
उरस पुरस श्री आई माता कहिया, राजा प्रजा लागे पाय।।
धूप जाप सम्पूर्ण विया, गादी बैठ श्री महमांईजी कहिया।

इण पछे अपणी शक्ति रे माफक तिल, जव ने घी होमणो। आहुती देवती वेला ओ जाप बोलणों।

है आई ए, काली ए, चन्डी ए, दुर्गा ओ,
भगवती जों आवो जों कारो।

इण माफक आहुतियां देय हवन करिया पछे आई मात री कथा बाचणो। आई माता री कथा जती भगा बाबाजी रे बणायोड़ी 'आई माता री साखी' आ आई माता री कथा है

घणा प्रेम सूं आई माता री साखी बोले ने सैं लोग साखी ने घणा प्रेम सूं मन लगाय ने सुणे। कथा पूरी विया पछे आई माता री आरती उतारे। ने पछे जको बीज रे व्रत रो उजमणों करे वो एक नारेल ने एक रुपयो लेय, जको कोई आगे सूं बीज व्रत करणी चावे उणने भेंट करे। कोई नी करणी चावे तो नारेल आई माताजी रे भेंट करणों चाहिजे। जिण वेला नारेल देवे उण वेला बोलणो चाहिजे के "हे आई माता मैं आपरो बेटो ओ बीज रो व्रत करतो आयो ने आज इणरो उजमणों करू हूं जे माराऊं की भूल व्ही वे तो आप मने नादान टाबर जाण माफ करावजो। मैं ओ बीज रे व्रत रो नारेल ....ने झेलाऊं हूँ, आप उणरो बीज व्रत पार घालजो।"

ने जको बीज व्रत रो नारेल झेले वो आ केवे "हे आई माता मैं आज सूं बीज रो व्रत झेलू हूं, आप इण वृत ने पार करवाईजो। मैं ओ बीज व्रत ....सूं झेलू हूं।"

आ केय ने पछे सगला लोगां ने आई माता रो पंचामृत बांटणो। उण वेला ओ जाप बोलणो।

अलील आवे, अलील जावे। अलील सब संतों में समावे।। राखे अलील की आस। जो पावे वैकुंठा में वास, नहीं राखे अलील री आस, जको दे कालिका ने काड।।

इण रे पछे सैं लोग भोजन करे ने बड़ा प्रेम सूं आई माता ने याद करे। शाम रा जागरण दरावणो चाहिजे।

"आई माता री कथा"

'साखी'

मांडवगढ सूं माताजी पधारिया, बीका रिख री राय।
पहलो परचो माजी जेकलजी दीधो, पहाड़ों में जोत जगाय ।।
पोठियो लीयो माजी साथ में, चिटियो लीधो हाथ ।
माजी पहाड़ों में पधारिया, थोथा (ज) कीधा पहाड़ ।।
उठा सूं माजी आगा पधारिया, गांव डायलाणा रे मांय।
एक परचो माजी उठे दीयो, बड़लो दीधो (रे) रूपाय ।।
उठा सूं माजी आगा सांसरै, मुरधर देशों माही।
कठेइक कीधो माजी पोठियो, कठेइक कीधो नाहर ।।
रमता गमता आगे हाले, आया भेसांणा रे मांय।
परचो दीधो गवालिया ने, भेसियां रा भाटा बणांय ।।
आगे हाले सोजत बेने, मुरधर देशो माय ।
आया पूगा माजी बिलाड़ा में, परचा दीधा है आय ।।
"आई" बिलाड़े पग दीधो, घर हांबड़ों री पोल।
गायों भेंयों देखी (माजी) मोकली धीणा री धमसोल ।।
पोठियो बांधियो माजी पोल में, दीना खिड़की में पांव।
छोटी सी बांधू (रे) हाम्बड़ो झूंपड़ी, बसूं गवाड़ी रे मांही ।।
आगै ही सांपत माजी मोकली, सुणजो जोगण माय।
भैयों बिखेरे थांरी झूंपड़ी, गायों खोसे ने खाय ।।
हाम्बड़ हलका बोलिया, दीधो पोठियो ताड़।
लाजों मारे डोकरी, बेठी गवाड़ी रे माहो ।।

अबखा मती भाखो हाम्बड़ो, मत राखो रोटी रो जोर।
भैयों रा भाटा वैसी, गायों ले जासी चोर ।।
बहुओं तो बिलखी बैठी, बैटा जांणी रौल।
पाछी नहीं आवे पूछड़ी, धेकूटां घर मांहि ।।
आछी दीवी अे जोगण वेदवा, बोया अे जोगण मांय।
एक परचो माजी उठे दियौ, घर हाम्बड़ो री पोल ।।
हांम्बड़ो सूं माजी कुमकिया, आया राठोड़ों री पोल।
पोठियो बांधियो माजी नीम रे, खिड़की में दीना है पांव ।।
दोनूं ई डोकरियां रिलमिली, मिलगी तन लगाय।
जुगत करने बूझे जोगणी, सुण माधा री माय ।।
छोटी सी बांधू म्हे झूपड़ी, बसूं गवाड़ी रे मांहि।
भलाई बांधो माजी झूपड़ी, म्हारा तो खुल गया है भाग ।।
हीडो टीकोड़ो म्हे करां, जावां चाकरी लाग।
माधाजी चाकरी करे, शहर रामपुरा रे मांहि ।।
रावजी सूं वेदी आई, म्हारी छूटण लागी है मांग।
सगा मेल्है ओलम्बा, नितरा काडे सांग ।।
डोरो बांध ने दागल कियो, पोते (ज) लाया जाय।
कुवा खिणाया राजा सांगरा ऊंडा अथंग अथाय ।।
रावजी परचो मांगियो, माजी बैठा जाजम ढाल।
हाथ जोड़ने रावजी पगे पड़ियो, लुललुल लागै पांव ।।
हिन्दू वाणी रा देवता म्हा ऊपर किरपा करजो आय ।।

कपड़ा पहरिया माजी सावटू, चिटियो भेलियो हाथ।
खेती करों खांत सूं, बोवां कवडिली जवार ।।
भाड़ो देवण ने कोयनी, भोजन कर लाऊं तैयार।
छोटो लीधो माजी छिबोलियो, मांहे एक जणा रो भात ।।

पंगत करने माजी जिमाड़िया, सौ मिनखों रे साथ ।
तखत सूंपियो गोयंद ने, टीको दीधो आय ।।
रहणी करणी में हालजो, गोयंदजी (थांरे) सिर ऊपर मोटी छाप।
आसण धारीया खांत सूं, बैठा धुन लगाय ।।
तीन खूंट में परचो पड़ियो, गीत वाली घर मांहि ।
आगू उमावो दोड़ियो, शब्द दीधा सुणाय ।।
नैम लियां नर तारीया, तिरीया नाडै जाय ।
माजी पड़दा सूं मन कीधौ, बांडेरू जाणी रोल ।।
नितका भैंटे ईसरी, पोह ऊगतड़ै प्रभात ।
कुलजुग में खरी निसाणी, केसर री ओलखाण ।।
बिलाड़ो बलराज रो, माजी कीधा मुकाम ।
गंगा बेहवे गोरवे, नितरा करौ स्नान ।।
खांत करने देखो माहलिया, देखो मुथरा तणा मंडाण ।
नित ऊठ आईजी रा दरसण करो, नित-नित बरसे नूर ।।
एक-एक सूं इदका वैही, अवतारों री ओल ।
आई पंथ आई नाथ रो, चवड़े ने चोगांन ।।
सरगां तणी (ज) वाटड़ियां, मांणका तणों व्यौपार ।
पीर रोहितासजी पिच्छम में पधारिया, गित ओलखिया नांहि ।।
सांत खेड़ा सैमल किया, बसायौ सथलाणों गांम ।
सरायों नै सरद किया, कुल में रेहगो नांम ।।
पितरां रा फूल पगे मेहलिया, मेट किया सब दुख ।
भूतावली में सूं टालनै, कीधा वैकुंटा में वास ।।
घोंची मोची तेरहवा, समदड़िया सिरदार ।
गादेड़े डोरो बांधियों, सोह बांधी गुजरात ।।
बारह बरसाऊं घरे पधारिया, तखत बिलाड़ा रे मांही ।
कांमी हरांमीं एड़ा ऊठीया, चुगली खादी जाय ।।

तेरह ताकड़ी सोनो रूपो लाया बाबजी,
धन रो छेह है न कोई पार ।
साची मिण मेलने, ठग ठग दुनिया खाय ।।
राजाजी चाकर मेलिया, लिया जोधाणे बुलाय ।
आगा पधारो जसरी जाजम, परचो दोनी आय ।।
सै मूढे साची कहूं, मन री देऊं बताय ।
परचो तो देसी माता ईसरी, म्हानै परचो नांहि ।।
मूता मसूदी बोलिया, सुणों सिरदारों बात ।
यादरिया परचो कुण देसी, साची देवो भास ।।
खोड़ो घड़ाओ खांत सूं, मसूदिया मांडिया डाव ।
सपने आई ईसरी, पग हाथी रो पांव ।।
जमी पड़िया केलड़ा, आकासां उड़ जाय ।
सतरा भाला भलकिया, खंडग सम्भायो हाथ ।।
साथी छूटो सूरमो, मर गया मांहो मांही ।
हाकम कोटड़ी सूं दोड़ियो, आयो बडेर री पोल ।।
दोय पहर धम धारो धरजो, थांने पीर रोहितास री आंण ।
हाकम कागद लिख मेलियो, म्हारो मुजरो मालुम थाय ।।
साढा सांत बीस गारत रहिया, आरमियो उभो साथ ।
हाथ जोड़ने राजाजी ऊठिया, म्हूं ऊबो हुसियार ।।
मन खोलनै मांगलो, मांगो जकेई तैयार ।
थांरै दूहजै चार खूंट-कुमी न कांई बात री ।।
म्हारे माथे आईजी रा हाथ ।।
पीपलियो पाइतो दीधो, आधो दीधो जोड ।
भानो भण्डारी यूं कहै, मत करो पीर रोहितास री होड ।।
ऐड़ो तुसियो लेवण नहीं पावे, घालो गधेपत गाल ।
तांबा पतरा करायनै, देवो 'नी' सुरै रुपाय ।।

थांरा घास में छिणगा निकलसी, म्हारा में नांहीं ।
जोधाणे सूं कुसले पधारिया, पड़ी नगाड़ों री ठोड़ ॥
परचो पायो पिरथमी, राज कुली राठौड़ ।
अवतारों रे संग रमे, कुमी नी राखी कोई ॥
पोराई परगट कीवी, चार खूंट रे मांहि ।
दोत मजिरा हाथ है, जुग में घाले लेख ॥
थली, मालवा, मुरधर देश, तीनों ही कीधा एकण रेख ।
लिछमणदासजी कंवर पदे, गित में फिरिया आप ॥
गादी सूंपी गरवा देव री, जपो आईजी रा जाप ।
बैरी जाय जोधोणे कूकीया, मोकली कीधी माथा धूण ॥
लिछमणदासजी ने गादी लिखी, मेटण वाला कुंण ।
बिलाड़ो सारो ही सैमल, सारां रा मन में कोड ॥
तखत विराजिया टीको दीयो, पड़ी नगारां ठौड़ ।
मन चाया कारज सरै, सगति तुम्हारे पास ॥
जियाग तो जाड़ो कियौ, धिनधिन हो लिछमणदास ।
सांवण भादरवो सुमर भरिया, दीधौ होद भराय ॥
पांच दिन कुरछी बाजी, धान खूठियो नांहि ।
पिरथवी वायक मेलिया, आया वरण अठार ॥
चौखा चावल लापसी, बांडेरूवां जीमौ बारम्बार ।
पखवाड़े लापो पड़ी रही, सोरम देवे धान ॥
जियाग तो भलो सुधारियो, जांणे देवता वालो कांम ।
मालवा रा वांडेरू भेला भया, घणी करे मनुहार ।
आप धणी मालागर पधारजो, म्हां गित रे माते हाथ ॥
असर जात फिरंगी री कहिजै, किणसूं गुदरै नांहि ।
परदेशों में परचो दीधो, पांवा पड़ियो आय ॥

लिछमणदासजी वैण बालियो, कर जोड़े भोपाल ।
अपुतियां ने पुत्र दियौ, हाथी बांधियो दुवार ॥
हाथी बांधियो हेत सूं, खरच खाता ने गाम ।
अपुतियों ने पुत्र दियौ, कुल में रहगो नांम ॥
मालवे महिमा घणी, माथे आईजी रा हाथ ।
पाछा कुशले पधारिया, बेली चाकर साथ ॥
लिछमणदासजी घरे पधारिया, तखत बिलाड़ा रे मांहि ।
मोती महलां पधारिया, माहे हींडो रो हाथ ॥
नित की धुरै नौबतो, देवी तणां दरबार ।
मास भादरवो बीज चन्द्रावली, पीर लिछमणदासजी री वार ॥
भाखी बगड़ी वालो 'भगो पंवार'
बिलाड़े म्हारो गुरूदुवारो, बसूं बगड़ी रे मांहि ।
म्हारे मालकतणों परताप, सुणजो बांडेरूओं रो सगलोई साथ ॥

'श्री आई माताजी री आरती'

मंगल की सेवा सुन मेरी देवी, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़ा ।
पान सुपारी ध्वजा नारीयल, ले ज्वाला तेरी भेट करे ॥
सुन जगदम्बे न कर बिलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे ॥टेर॥
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करै ॥
माँ अम्बा मेरी सहाय करे, मां दुर्गा मोरी सहाय करै ॥१॥
बुद्धि विधाता तूं जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े ॥
जब जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, तब-तब देवी सहाय करे ॥
माँ अम्बा ॥टेर॥
वृहस्पतिवारि तूं जगमोयो, तरूणी रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग धरे ॥

शुक्र सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे ॥
मां अम्बा ॥टेर॥

ब्रह्मा विष्णु महेष सकल मिल, लिये भेंट तेरे द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे ॥टेर॥

वार शनिश्चर कुंकुम वरणों, जब लंका पर हुकल करे ।
खड़ग खप्पर त्रिशूल हाथ में, रक्त बीज को भस्म करे ।
शुम्भ नी शुभ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दले ॥टेर॥

आदितवारी आद भवानी, जिन अपने को कष्ट हरे ।
क्रोधित होकर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे ॥
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे ॥टेर॥

सोम्य स्वभाव धरो गोरी माता, जिनकी अर्ज कबूल करे ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे ॥
दर्शन पावे मंगल गावै, सिद्ध साधु तेरे भेंट धरे ॥टेर॥

ब्रह्मा वेद पढे तेरे द्वारे, शिवशंकरजी ध्यान धरे ।
इन्द्र कृष्ण थारी करे आरती, चंवर कुबेर ढुलाय रहे ॥
जय जननी जय मात भवानी, अटल भवन में राज करे ।

सुन जगदम्बे न कर विलम्बे, सन्तन के भंडार भरे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे ।
मां अम्बा मेरी सहाय करे, मां दुर्गा मेरी सहाय करे ।

